AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

उमेश कुमार चौरसिया के नाटकों में चित्रित मूल्य संक्रमणः सामाजिक ,ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिपार्श्व

बलदेव राम[1], डॉ. राजेश कुमार शर्मा[2]
[1]शोधार्थी , हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FORPUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MYGUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE THE PUBLISHER WIL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE IF ANY OF SUCH MATTER OCCUR PUBLISHER MAYREMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL

बदलते सामाजिक मूल्यों के प्रतिमान

उमेश कुमार चौरसिया जी कहते है कि आज किसी भी युवा से पूछा जाए कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है तो उत्तर मिलता है 'खूब सारा पैसा कमाना', 'भौतिक संसाधन प्राप्त करना', 'बड़ा पद हासिल करना' और इस सबसे 'भौतिक सुखों का आनन्द लेना'। वैश्वीकरण के कारण भौतिकवाद की लालसा और भी बढ़ गयी है। पैसा पाने के लिए कोई कुछ भी करने को तैयार रहता है, कुछ भी कर सकता है। इस भौतिकवाद के नशे ने नयी पीढ़ी और समाज से नैतिक व सामाजिक मूल्यों को गिरा दिया है। शिष्टाचार, संस्कार, नैतिकता और भारतीय संस्कृति को तो जैसे सब भूलने लगे हैं। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि 'पाश्चात्य का अनुसरण करना है तो केवल विज्ञान का ज्ञान उनसे प्राप्त करो, किन्तु संस्कार और अध्यात्म तो भारत ही सम्पूर्ण विश्व को सिखा सकता है।' ये संस्कार और अध्यात्म ही जीवन का वास्तविक सुख दे सकते हैं, भौतिक संसाधन तो नश्वर हैं, उनसे क्षणिक सुख का अहसास हो सकता है किन्तु आत्मिक सुख का नहीं। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम और कर्मयोगी श्रीकृष्ण की यह दिव्य भारत भूमि हमें त्याग और सेवा का आदर्श सिखाती है, वास्तव में मनुष्य जीवन का अंतिम लक्ष्य भी यही होना चाहिए।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

संरचनात्मक परिवर्तनों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन सामाजिक मूल्यों में होने वाला परिवर्तन है। सामाजिक मूल्य व्यक्ति के सामाजिक कार्यों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक मूल्यों में होने वाला परिवर्तन सामाजिक संरचना तथा सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करता है। ये परिवर्तन धीमी गति से होते हैं तथा बहुत अधिक समय बाद होते हैं। हमारे देश के प्राचीन काल में जाति आधारित सामाजिक मूल्य व्यक्ति की प्रतिष्ठा से सम्बन्धित हुआ करते थे।[1]

वर्तमान युग समस्याओं का युग है। आज पूरा विश्व कई प्रकार की सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है। हमारा देश भी इससे अछूता नहीं है। इन दिनों हमारा देश कई ज्वलंत समस्याओं से जूझ रहा है। इनमें आतंकवाद, उग्रवाद, गरीबी, बेरोजगारी, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद और बाल अपराध जैसी प्रमुख समस्याएं हैं, समाज और देश को इससे बाहर निकालने के लिए इन समस्याओं का समाधान खोजना आवश्यक है।

सामाजिक प्रक्रिया एक जटिल सामाजिक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है। सामाजिक विघटन परिवर्तन का परिणाम है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने इसकी अवधारणा को समझाने का प्रयास किया है। यदि इन सभी के विचारों पर ध्यान दिया जाए तो दो प्रकार के विचार स्पष्ट होते हैं।

एक ओर मैकाबेर और पेज, किंग्सले डेविस और उनके कई समर्थकों का मत है कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन दो अलग–अलग अवधारणाएँ हैं और उन्हें समझने के लिए इन दोनों प्रक्रियाओं को अलग–अलग समझना आवश्यक है। दूसरी ओर, गिल्ली और गिलिन और उनके समर्थकों का विचार है कि सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन दोनों ही इतने परस्पर जुड़े हुए हैं कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते हमारा सामाजिक मूल्यों से सीधा संबंध है।

व्यावसायिक मनोरंजन भी वर्तमान में सामाजिक मूल्यों में नकारात्मक परिवर्तन में महत्ती भूमिका निभा रहा है, जिसमें नौटंकी, नाटक, लोकगीत आदि जैसे क्षेत्रीय मनोरंजन लुप्तप्राय

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

हो गए हैं और सिनेमा पर आधारित मनोरंजन परोसा जा रहा है। निजी टीवी चैनलों पर असंस्कारी और अश्लील कार्यक्रमों की बहुतायत के कारण देश और समाज में पश्चिमी सभ्यता की विकृतियाँ पनपने लगी है।

आज के बच्चे और युवा स्मार्टफोन की तरह स्मार्ट हैं।[2] अगर आप उनके स्मार्टफोन को कंट्रोल में रखना चाहते हैं तो आपको भी उन्हीं की तरह स्मार्ट बनना होगा। स्मार्ट मोबाइल फोन के कारण बच्चों और युवाओं के शारीरिक विकास की गति प्रभावित हो रही है। युवा खेल के मैदानों से मुंह मोड़ रहे हैं, दिन भर टीवी के सामने बैठकर क्रिकेट मैच देख रहे हैं लेकिन खुद नहीं खेल पा रहे हैं। बच्चे दिन भर मोबाइल और इंटरनेट पर कुछ न कुछ करते रहते हैं, उनसे मोबाइल मांगने पर चिढ़ भी जाते हैं।

हालांकि फैशन समाज में स्थिर रहता है, लेकिन इसे व्यापार के साथ जोड़कर देखा जा रहा है। मनुष्य नवाचार और विविधता के लिए परिवर्तन चाहता है। यही कारण है कि वो प्राचीन भारतीय आदर्शों पर चलने की बजाय नवाचार और कथित आधुनिक परिवर्तन के प्रेमी बन गए हैं। जब भी समाज में रीति–रिवाजों का पतन होता है, फैशन का चलन बहुत जोर से होता है। आज समाज में औद्योगीकरण के बढ़ने से भी फैशन का चलन अधिक बढ़ गया है। फैशन के साथ चलने में व्यक्ति स्वयं को जागरूक और आधुनिक महसूस करने का भ्रम पाले रहता है।[3]

आज के समय पर नजर डालें तो लगता है कि बचपन से ही नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। शिक्षकों को बच्चों और युवाओं का रोल मॉडल बनकर भविष्य के मानव समाज के निर्माण में संरचनात्मक योगदान देना होगा।

यह सच है कि वर्तमान परिदृश्य में बदलते सामाजिक मूल्यों के आधार पर संस्थाओं द्वारा पारिवारिक कार्यों को हाथ में लिया गया है, लेकिन परिवार का पूर्ण विलोपन असंभव है। पारिवारिक प्रेम, संतानोत्पत्ति और देखभाल का कार्य किसी अन्य संस्था से करवाना संभव नहीं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

है। परिवारों की प्रकृति अलग–अलग समय में जरूर बदली है, लेकिन यह कभी खत्म नहीं हुई। इसमें सिर्फ बदलाव हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, जो परिवार और समाज शिकार की अवस्था में था, वह अब पशुचारण और कृषि अवस्था में नहीं है, इसी प्रकार जो परिवार कृषि अवस्था में था वह वर्तमान में अन्य रोजगार में बदल गया है, फिर भी परिवार नामक संस्था आज भी अपनी जगह पर कायम है।[4]

उमेश कुमार चौरसिया जी के नाटक ओ अहल्या! में पात्रों को बहुत सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया है जो इस प्रकार हैं:– अहल्या, गौतम, सीरध्वज, इन्द्र, अमितलाभ, बालक शत, नारद, राम लक्ष्मण, विश्वामित्र, सेवक, दो ऋषिगण, चार ब्रह्मचारी शिष्य, दो सभासद, कुछ आश्रम सेवक व सेविकाएं। इन सब पात्रों और विविध रोचक घटनाक्रम को प्रदर्शित करते हुए नाटक समाज में स्त्री की स्थिति को लेकर अनेक प्रश्न उठाता है। पौराणिक कथानक को वर्तमान संदर्भ में सामाजिक मूल्यों के संवाहक के रूप में दिखाया गया है।

नैतिकता का ह्रास व समाज

समाज में पारिवारिक रिश्तों का ह्रास हो रहा है, आपसी संबंधों की मर्यादा टूट रही है। आधुनिकता के नाम पर रिश्तों में खटास पनप रही है। समाज की नकारात्मक मानसिकता ने पारिवारिक संबंधों, प्रकृति, पर्यावरण और मानवीय संवेदनाओं को बड़े स्तर पर मिटा ही दिया है। हवा, पानी, पेड़, जानवर और पूरी पृथ्वी इसकी चपेट में आ रहे हैं। हमारी प्राचीन परम्पराओं में इन सबको ईश्वर तत्व के रूप में जाना और पूजा भी जाता था क्योंकि इनमें जीवन फलता–फूलता है। लेकिन वर्तमान समय में मनुष्य इन सबका शोषण कर स्वयं को खंडित कर स्वयं को ही असुरक्षित बना रहा है।

यह एक दुखद सपने की तरह है कि एक आदमी जो इस पृथ्वी की सबसे अच्छी कृति होने का दावा करता है, लेकिन सम्पूर्ण ब्रह्मांड में वो व्यावहारिक रूप से हीनता में परिवर्तित होता जा रहा है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

आज की उपभोक्ता संस्कृति उपभोग करना जानती है। इसका जनहित, नुकसान, सुख–दुख, लाभ–हानि आदि से कोई लेना–देना नहीं है। यह संस्कृति इतनी अमानवीय हो गई है कि गरीब किसानों को उनके प्रचार के लिए सार्वजनिक रूप से उनके कपड़े उतारकर और उनका वीडियो बनाकर फांसी दी जाती है, इसे दिखाकर मीडिया खुद को धन्य मानती है। कोरोना काल में स्थिति और भी भयावह होती जा रही है, लोग सांस, ऑक्सीजन, अस्पतालों में बिस्तरों के सौदे के लिए संघर्ष कर रहे हैं, दवाओं की कालाबाजारी अपने चरम पर है, यह सब इसलिए क्योंकि हम नैतिक मूल्य खो चुके हैं।[6]

युवा पीढ़ी भटकाव की राह पर है। इसका मुख्य कारण पारिवारिक मूल्यों का अभाव और सामाजिक मूल्यों में बदलाव है। दूरसंचार प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, समाज में कदाचार और अनुशासन हीनता का बोलबाला हो गया हैं। युवाओं में भावनात्मक भटकाव आ गया है। इसका दूसरा मुख्य कारण शिक्षा का अधूरा होना भी है। शिक्षा किताबों तक ही सिमट कर रह गई है। समाज से नैतिक मूल्यों का पलायन जारी है।

आज भी समाज जाति, धर्म और साम्प्रदायिकता की संकीर्ण मानसिकता में जी रहा है। आज मानव जीवन आतंकवाद, नक्सलवाद, तालिबान, आइसिस और अनेक प्रकार की क्रूर साम्प्रदायिकता के तांडव में कीड़े–मकोड़ों जैसी स्थिति में आ गया है। कमजोर, असहाय, जरुरतमंद व्यक्ति की नियति हो गयी है ताकतवर के आगे झुकना। शोषित और असंगठित सामाजिक व्यवस्था, जिसमें सामंती और पूंजीवादी मूल्यों का वर्चस्व है, इसने मनुष्य को विवेक और चेतना से रहित कर दिया है। आज की उपभोक्ता संस्कृति वास्तव में सामाजिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के प्रति असहिष्णु है।

आज कोई व्यक्ति सच नहीं बोल सकता, वह अन्याय का प्रतिकार नहीं कर सकता। आज व्यक्ति सामाजिक और मानवीय संवेदनाओं के लिए अपने भौतिक सुखों का त्याग करने को

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

तैयार नहीं है। दलित आज भी दलित है। दलित मुक्ति के नाम पर वोट हथियाने वाले जब सरकार में आते हैं तो दलितों से उनकी चिंता खत्म हो जाती है।[7]

नारी प्रवचन समाज में एक समसामयिक विषय है और जहाँ स्त्री–समानता, नारी–स्वतंत्रता, नारी–जागृति, नारी–जागरूकता, उनके अधिकार और शिक्षा पर बड़ी–बड़ी बातें होती हैं, वहीं दूसरी ओर निर्भया जैसी हजारों–हजारों बलात्कार, हत्याएँ, घरेलू हिंसा जैसे महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं रोज बढ़ती रहती हैं। इससे सिद्ध होता है कि मानवीय संवेदनाओं का ह्रास तेजी से हो रहा है।

किसी देश, जाति या समाज की संस्कृति का मूल आधार उसके मानवीय मूल्य और परंपराएं होती हैं, जो समय की बर्बादी को झेलने के बाद भी अपनी विशिष्ट पहचान नहीं खोती हैं। ये जीवन मूल्य हमारी सामाजिक और आध्यात्मिक सोच से बने हैं। वे प्राचीन काल के सांस्कृतिक और सामाजिक सरोकारों को अपनाते हुए मानवीय संवेदनाओं के वाहक हैं। ये हमारी सांस्कृतिक चेतना के लक्षण हैं। आधुनिक पश्चिमी विचार हमारी संस्कृति और समाज के मूल्यों को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित कर रहा है। हर देश की संस्कृति और सभ्यता उस देश के समाज और समय के अनुकूल होती है, लेकिन अगर कोई अन्य देश या समाज उसकी नकल करता है, तो उसके परिणाम हमेशा गंभीर और पतनशील होते हैं। टूटा हुआ परिवार, बिखरा हुआ वैवाहिक जीवन, बच्चों के भविष्य की असुरक्षा, महिलाओं के प्रति असंवेदनशीलता, पर्यावरण के प्रति उदासीनता, पूंजीवादी मानसिकता, जल्दी सफल होने की प्रवृत्ति हमारी संवेदनाओं को विकृति के प्रति प्रेरित कर रही है।[8] मनुष्य को पशुओं से अलग करने वाले संस्कार, भाव और जीवन मूल्य उसे पशुता की ओर ले जा रहे हैं। लेकिन अभी भी उम्मीद की एक किरण बाकी है। नयी पीढ़ी को सही राह दिखानी होगी क्योंकि जब तक युवा अपनी बुनियादी विशेषताओं और संभावनाओं को नहीं समझेंगे, तब तक विचलन जारी रहेगा। यौवन में इच्छाशक्ति जगानी चाहिए, सकारात्मक संकल्प के साथ व्यक्ति संयमित और दृढ़ हो जाता है, असंभव को संभव करने की यही ऊर्जा इच्छाशक्ति और आत्मिक संबल है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

युवाओं को एक ऐसे मार्गदर्शक की जरूरत है, जिसके मार्गदर्शन में युवा ऊर्जा ऊपर की ओर प्रवाहित हो, शुद्ध और परिष्कृत जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा मिले। जिन का अनुकरण करके युवा अपने आप में साहस, संवेदनशीलता, सेवा और सृजन के गुणों का विकास कर सकते हैं।

उमेश कुमार चौरसिया जी द्वारा रचित नाटक 'टूटता भ्रम' में परिवार के मूल आधार पति–पत्नी के रिश्तों को प्रभावी रूप से उकेरा गया है। सुखद दाम्पत्य ही परिवार के सुख का आधार है, यदि परिवार के मुखिया का दाम्पत्य सरस होगा तो परिवार में भी परस्पर सामंजस्य, सहयोग और प्रीत का वातावरण बना रहेगा। इस नाटक में यही बताया गया है कि किस प्रकार पति पाश्चात्य विकृति के वशीभूत होकर पत्नी का तिरस्कार करता है, उसका अपमान करता है, उसे हेय दृष्टि से देखता है।[9] तब पत्नी भी पति की ईच्छा के अनुरूप कथित पढ़ी–लिखी आधुनिक स्त्रियों का अनुसरण करने लगती है, आधुनिकता का लिबास पहन नशे आदि की प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर होने लगती है। यह देखकर पति को अपनी गलती का अहसास होता है और वह समझता है कि भारतीय जीवन मूल्य ही सुखद दाम्पत्य की नींव हैं, पाश्चात्यकरण परिवार को तोड़ने का काम कर सकता है, जोड़े रखने का कभी भी नहीं। इसी प्रकार ऐतिहासिक परिवेश लिये नाटक 'सूर्यपुत्र कर्ण' में कर्ण की मनोदशा और स्थितियों को बखूबी दर्शाते हुए बताया गया है कि मनुष्य कर्म से श्रेष्ठ बनता है, जाति अथवा जन्म से नहीं। नाटक 'ओ अहल्या' में रामायण के लोकप्रिय पात्र अहल्या को केन्द्र में रखकर समाज की कुरीतियों और मनुष्य की कुत्सित मानसिकता पर प्रहार किया गया है। अहल्या को पत्थर के समान निस्पंद और गुमनाम जीवन भोगना पड़ा तो उसके पीछे पुरूषप्रधान समाज की सोच जिम्मेदार है। अहल्या को इन्द्र के किये छलपूर्ण अपराध की सजा भुगतनी पड़ी जबकि इन्द्र अल्पदण्ड लेकर देवता ही बना रहा, इन्द्र को आमंत्रित करने वाले विद्वान राजा सीरध्वज और अहल्या के पति सवैज्ञ ऋषि गौतम क्या दोषी नहीं थे? ऐसे ही अनेक प्रश्न उठाते इस नाटक के माध्यम से उमेश कुमार चौरसिया ने स्त्री संवेदना और शोषण की स्थिति को प्रभावी रूप से

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

उकेरा है। नाटक 'वीरांगना पन्ना' पन्नाधाय द्वारा मातृभूमि की रक्षा के प्रति समर्पण भाव दर्शाते हुए स्वपुत्र तक का त्याग कर देने का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करता है। हाल ही में जवाहर कला केन्द्र जयपुर से प्रकाशित नाटक 'राम कबीरा एक है' में संत कबीर के जीवन चरित्र को दिखाते हुए उनकी सर्वसमभाव की दृष्टि, सादगी और भारतीय संस्कृति–परम्पराओं के प्रति आस्था तथा विश्वास को उद्धृत किया गया है। 'एकलव्य' नाटक जहाँ एकलव्य की गुरू के प्रति सम्मान और लक्ष्य के प्रति एकाकार साधना को प्रकट करता है वहीं यह नाटक आदिवासी समाज या दलित समाज की राष्ट्रभाव के प्रति आस्था रखने वाली उत्कृष्ट परम्पराओं को भी स्पष्ट करता हैं।[10] नाटककार उमेश कुमार चौरसिया रचित ऐसे कई नाटक हैं जिनके माध्यम से उन्होंने न केवल मानवीय संवेदनाओं के क्षरण को गहरे अर्थों में उजागर किया है वरन् उनसे उबरने, उनका समाधान करने की ओर भी सकारात्मक चिन्तन प्रस्तुत किया है। आपके सभी नाटकों में जीवन के मूल्य और आदर्श प्राथमिकता एवं प्रमुखता के साथ दिखाई देत हैं। श्री चौरसिया जी इसे ही अपने नाट्यकर्म का उद्देश्य भी मानते है।

उमेश कुमार चौरसिया जी झूठ का पर्दाफाश करने के लिए 'गांधीजी की सीख', 'अच्छा इंसान' और 'सत्य का अपहरण' जैसे साहसिक नाटक रच रहे हैं। लेकिन चिंताजनक सवाल यह है कि क्या दोनों का यह बौद्धिक संघर्ष भारत के आदर्शों की विश्वसनीयता और सुरक्षा को बरकरार रख पाएगा?

उमेश जी ने अपने नाटकों के माध्यम से बताया है कि विचार व्यक्ति को बांधता है और विचार ही व्यक्ति को मुक्त भी करता है। विचारों में जीवन शक्ति, जीवन की ऊर्जा होती है, हर संवाद जीवन का संदेश बन जाता है। विचारों के आईने में व्यक्ति का चेहरा चरित्र की पहचान देता है। इसलिए आज विचार क्रांति अथवा वैचारिक आंदोलन की अधिक आवश्यकता है, इससे समाज में व्यापक परिवर्तन लाया जा सकता है और यही सशक्त, सम्पन्न और उन्नत राष्ट्र निर्माण का आधार है। यदि विचारों के साथ विवेक और एक निश्चित समझ न हो, तो विचार बिना किसी कारण के कई समस्याएं पैदा करता है। इससे न केवल हमारे बीच मतभेद होते हैं,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

बल्कि सांप्रदायिकता की ऐसी दरारें भी पैदा हो जाती हैं, जिन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी नहीं पाटा जा सकता है। पल भर में सब रिश्तों का गणित बदल जाता है।[11]

नैतिक मूल्यों का ह्रास और चरित्र का ह्रास अनेक समस्याओं का कारण है। हमें राष्ट्रीय जीवन में नैतिकता स्थापित करने के लिए समस्या की जड़ तक जाना होगा। हम पत्तियों और फूलों की सिंचाई पर अधिक भरोसा करते हैं, जड़ों की सिंचाई पर कम ध्यान देते हैं, इसलिए पत्ते और फूल मुरझा जाते हैं। अणुव्रत आंदोलन समस्या की जड़ को पकड़ने का उपक्रम है। देश और दुनिया में यह पहला नैतिक आंदोलन है, जिसने धार्मिकता के साथ नैतिकता की एक नई सोच देकर एक नया दर्शन प्रस्तुत किया है। आज के संदर्भ में हम उच्च आदर्शों और इससे जुड़े अनुव्रत लेखक मंच वाले इस आंदोलन को व्यापक बनाने की उम्मीद करते हैं, ताकि हम नैतिक मूल्यों के आधार पर एक नए भारत का निर्माण कर सकें।[12]

गिरते जीवन मूल्य व बढ़ता अपराधीकरण

मुझे यह लिखते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि मेरा जन्म उस महान देश की पवित्र भूमि पर हुआ, जहां ऋषियों, तपस्वियों, गुरुओं ने अपने वैदिक और दिव्य ज्ञान के माध्यम से जीवन के उच्च आदर्शों, मूल्यों और संस्कारों और भारतीय स्थापित संस्कृति की स्थापना की और विश्व मंच पर वैभव वास्तव में इन्हीं आदर्शों और जीवन मूल्यों के बल पर प्राप्त हुआ तथा मेरा भारत विश्वगुरु कहलाया। इसके साथ ही सामाजिक, आर्थिक और व्यावहारिक श्रेष्ठता और गुणों के कारण इसे सोने की चिड़िया के नाम से अलंकृत किया गया। एक समय था जब दुनिया भर से लोग भारत वर्ष (मनुस्मृति) में जन्मे भारतीयों से आध्यात्मिक शिक्षा लेने के लिए यहां आते थे।

एतत देश प्रसूतस्य, सकाशात् अग्र जन्मनः, स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्व मरनवाः ।। (मनुस्मृति से)

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

लेकिन आज मुझे बड़े दुख और चिंता के साथ यह कहना और लिखना पड़ रहा है कि समय बीतने के साथ–साथ मेरी इस भारत भूमि पर जीवन के मूल्य भी बदलने लगे और इससे सामाजिक और राजनीतिक स्तर गिरने लगा। आज देश जिन हालात से गुजर रहा है, वह सब हमारे सामने है। आए दिन कुछ न कुछ ऐसा होता रहता है कि हर भारतीय का सिर शर्म से झुक जाता है। जिससे इंसानियत और इंसानियत दिन–ब–दिन कम होती जा रही है। कानून व्यवस्था का डर भी कम हो रहा है। यह सब बड़ी चिंता का विषय है। हम सब देख रहे हैं कि महिलाएं हर दिन वासना और अत्याचार की शिकार हो रही हैं और देश की अधिकांश युवा शक्ति पथ भ्रष्ट हो रही है। वर्तमान में 16 दिसंबर, 2012 दिल्ली के निर्भय–दामिनी जैसे भ्रष्टाचार, घोटाले और जघन्य अपराधों को देखकर ऐसा लग रहा है। भ्रूणहत्या के बढ़ते मामलों देखकर ऐसा लगता है कि हमारी संस्कृति और परंपरा का ह्रास हो रहा है। इन सभी गंभीर समस्याओं का कारण जानना और उनका निवारण करना आज हम सभी देशवासियों के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।[14]

आधुनिक भौतिकवादी समाज में मानव जीवन सभी आयामों में तेजी से बढ़ता जा रहा है, लेकिन इस मानव जीवन का एक पहलू यह भी है जो लगातार नीचे जा रहा है और मर रहा है और वह पहलू नैतिकता और आध्यात्मिकता का, जो मानव को एक सार्थक मनुष्य का प्रतीक बनाता है, इंसानीयत–मानवता का प्रतीक बनाता है।

समाज में बढ़ती हिंसक मानसिकता ने इस नैतिकता को इतनी गहरी खाई में धकेल दिया है कि व्यक्ति सामाजिक, धार्मिक और नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा है। इस डिजिटल युग में इन नैतिक मूल्यों का ह्रास भी डिजिटल होता जा रहा है और साइबर अपराध इसका सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। यहां तक कि दया, क्षमा और करुणा जैसे बुनियादी नैतिक मूल्य भी लगभग लुप्त हो रहे हैं। नैतिक पतन की ओर उन्मुख इस समाज के लिए वह दिन दूर नहीं जब व्यक्ति असहिष्णु हो जाता है और हिंसा को न्याय का साधन मानने लगता है, जो पूरी तरह से अनुचित है, जिसे नैतिक भाषा में प्रतिशोध ही कहा जा सकता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

महात्मा गांधी ने अपने दर्शन में हमेशा कहा है कि ''साध्य के साथ–साथ साधन भी शुद्ध होना चाहिए'', लेकिन संकीर्ण मानसिकता से भरे इस समाज में व्यक्ति साध्य की शुद्धता को तो याद रखता है लेकिन साधनों की शुद्धता को भूल जाता है।[15]

पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय समाज को ऐसे मोड़ पर प्रस्तुत किया है कि हम लगातार अपनी संस्कृति और गरिमा की अनदेखी कर रहे हैं। 18 वीं शताब्दी के महान समाज सुधारकों ने संस्कृति को बचाने के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया, आज हम उसी संस्कृति को अपने पैरों तले कुचल रहे हैं।

गिरते नैतिक मूल्यों को बचाने और संस्कृति को चरमोत्कर्ष पर लाने के लिए एक ऐसी क्रांति की आवश्यकता है, जो पतन का सामना कर रहे समाज को एक नई दिशा दे सके। लेकिन यह भी आवश्यक है कि इस क्रांति का आधार वैचारिक, तर्कसंगत और न्यायसंगत हो, अर्थात महात्मा गांधी के विचारों के अनुसार साधन और साध्य दोनों की शुद्धता आवश्यक है। उमेश कुमार चौरसिया जी ने अपने नाटक 'कर्त्तव्य पथ' में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के युवा जीवन के प्रसंगों को उकेरते हुए बताया है कि इस पुनर्जागरण का सबसे शक्तिशाली माध्यम हमारी युवा पीढ़ी है। इस नाटक में बताया गया है कि युवा सुभाष किस प्रकार भारतीय स्वाभिमान व गौरव के लिए संघर्ष करते दिखते हैं, अंग्रेजों द्वारा भारतीयों की विपन्नता पर उपहास करने पर उसका विरोध करते हैं और आईसीएस जैसी प्रतिष्ठित व सर्वसुविधायुक्त नौकरी में चयन के उपरान्त भी गुलामी नहीं करने का संकल्प लेते हुए उसे त्याग देते हैं और स्वयं को भारत की आजादी के कष्टप्रद संघर्ष में झोंक देते हैं।

सांस्कृतिक विघटन

मनुष्य स्वयं अपनी आवश्यकताओं का निर्माता और आपूर्तिकर्ता है। मनुष्य की सुविधा को ध्यान में रखते हुए कहा गया है कि 'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है'। सभ्यता के विकास से अब तक यह बात भी स्पष्ट हो गई है। आज उसने अपनी सभ्य दुनिया का इतना विस्तार

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

और विकास कर लिया है कि अगर वह कुछ दिनों या कुछ वर्षों तक कुछ नहीं करता है, तो भी उसकी समृद्धि में किसी भी तरह की कमी नहीं होगी। मनुष्य द्वारा विकसित इस संसार का एक तथ्य यह भी है कि अतीत में जीवन जीकर उसके द्वारा वर्तमान में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। इसी के आधार पर भविष्य की संभावनाएं बढ़ती और विकसित होती हैं। वह व्यक्ति जो अतीत और वर्तमान में सामंजस्य की भावना तैयार करता है, यदि वह कुछ भी करने में सक्षम नहीं है तो उसे कोई अपनी जरूरत की चीजें गिफ्ट भी कर सकता है। यही मानव समाज है और यही इसकी सामाजिकता है।

स्पेंगलर ने कहा, ''पश्चिम में यांत्रिक प्रौद्योगिकी का इतिहास अपने आवश्यक भोजन की ओर तेजी से बढ़ रहा है। हर संस्कृति के महान रूपों की तरह यह स्थिति भी अपने आप समाप्त हो जाएगी। कब और कैसे, हम नहीं जानते। इसी तरह, सांस्कृतिक विघटन से आच्छादित भौतिक प्रगति से निराश श्वित्जर ने लिखा कि अंधेरे के समय में हमने एक अंधेरी यात्रा शुरू की है। आज मनुष्य का सारा ज्ञान वैज्ञानिक प्रयोगों तक ही सीमित है। मनुष्य के ये प्रयोग उनके अंतिम लक्ष्य 'मानवता' को बढ़ाना नहीं बल्कि उनके नैतिक पतन, चिंता, स्वार्थ, अहंकार और संकीर्णता को ढंकना है। **श्री अरबिंदो के शब्दों में, मनुष्य ने एक ऐसी सभ्यता का निर्माण किया है जो उसकी सीमित क्षमता से सीमित है। और बुद्धि से कहीं बड़ा है। इसकी सीमित, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति द्वारा न तो इसका ठीक से उपयोग किया जा सकता है और न ही इसका प्रबंधन किया जा सकता है। यह (सभ्यता) अपने अहंकार और वासना का एक खतरनाक साधन है।''**

सांस्कृतिक विघटन की अवधारणा – सामान्यतया सांस्कृतिक विघटन का अर्थ है सांस्कृतिक व्यवस्था में उत्पन्न असंतुलन। सांस्कृतिक विघटन की अवधारणा को समझने से पहले संस्कृति का अर्थ जानना आवश्यक है। संस्कृति उन सभी व्यवहारों की समग्रता को संदर्भित करती है जिनका लक्ष्य व्यक्तित्व को परिष्कृत करना और व्यक्ति के सामने जीवन के अंतिम लक्ष्य को स्पष्ट करना है। संस्कृति के दायरे की व्याख्या करते हुए टायलर ने लिखा है कि संस्कृति वह

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

जटिल संपूर्ण है जिसमें ज्ञान, विश्वास, आचरण, कानून, रीति–रिवाज और ऐसी सभी क्षमताएं शामिल हैं जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में प्राप्त करता है। लुंडबर्ग के शब्दों में, 'संस्कृति को एक ऐसी प्रणाली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें हम सामाजिक रूप से अर्जित करते हैं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पारित होते हैं, जो निर्णयों, विश्वासों, आचरण के तरीकों और व्यवहार के पारंपरिक पैटर्न से उत्पन्न होते हैं। इसमें प्रतीकात्मक और भौतिक तत्व शामिल हैं।

सामान्य तौर पर तेजी से बदलती तकनीक और मानवतावादी सोच ने एक तरफ अस्पृश्यता, तीन तलाक, दहेज जैसी पुरानी मान्यताओं को दरकिनार करने की कोशिश की और दूसरी तरफ भ्रष्टाचार और नैतिक पतन ने भी सांस्कृतिक ढांचे को पूरी तरह से विघटित करने की कोशिश की।

सांस्कृतिक विघटन के कारण –

(1) तेजी से बदलते समाज के मूल्य और मानदंड।

(2) नैतिक पतन।

(3) भौतिकवादी सोच

(4) व्यक्तिवाद

(5) व्यवहार और व्यवहार के तरीकों में बदलाव।

(6) धार्मिक संस्थाओं जैसे सांस्कृतिक संस्थानों के प्रभाव में कमी।

(7) आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण

(8) सोरोकिन ने कहा है कि जब संवेदी संस्कृति, यानी संवेदी आनंद की मात्रा, वैचारिक संस्कृति की तुलना में अधिक प्रभावी हो जाती है, तो इस स्थिति को सांस्कृतिक विघटन कहा जाता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

प्रायोगिक रंगमंच कलाकार, नाटककार और संवेदनशील रचनाकार के रूप में जाने जाने वाले उमेश कुमार चौरसिया के मन पर बचपन से ही स्वामी विवेकानंद का प्रभाव रहा है। विवेकानंद को आदर्श मानने वाले श्री चौरसिया कला और साहित्य के सामाजिक उत्थान, सेवा और प्रचार–प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

उमेश कुमार चौरसिया जी ने अपने नाटकों में आधुनिक संदर्भ का भी बखूबी उल्लेख किया है। आज के समय में हमारा समाज–खासकर शहरी समाज एक तरह के सांस्कृतिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। अध्यात्म लुप्त हो रहा है, संतोष, धैर्य, समरसता आदि हमारे मन से लुप्त हो रहे हैं और उनके स्थान पर भौतिकता का साम्राज्य फैल रहा है। हम भौतिकता के जाल में इस कदर फंस गए हैं कि अब हम इससे बचने या इससे बाहर निकलने की कसम भी खा लेते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद जब महिला को घर की सीमा से बाहर कामकाजी, नौकरीपेशा महिला के रूप में कार्य करने का अवसर मिला तो वह अनेक पुरुषों के संपर्क में आई और इस प्रकार युगों–युगों से दबाये जा रहे विकृत कार्य–निराशा ने सबको तोड़ दिया। इसकी बाधाएं, सीमाएं आदि। विशेष रूप से मध्यम वर्गीय परिवारों में, इस भौतिकवादी प्रवृत्ति ने पति–पत्नी, मां–बेटी आदि के बीच संबंधों को खोखला कर दिया, जो अटूट माने जाते थे।

आजादी के बाद के भारतीय परिवेश को देखते हुए यह तथ्य सामने आया है कि इस माहौल में जहां एक और प्राचीन प्रवृत्ति संरक्षित है। दूसरी ओर आधुनिकता और पुनरुत्थान की प्रवृत्तियाँ भी विभिन्न रूपों में विकसित हुई हैं।[15] इस माहौल में आज व्यक्ति के सामने मूल्यों का संकट अपने आप में एक ज्वलंत समस्या है। मूल्य संकट की यह समस्या मुख्य रूप से नई पीढ़ी को झेलनी पड़ रही है। स्वतंत्रता के बाद नए विचारों के प्रसार और बदलते परिवेश से नई पीढ़ी को लगने लगा है कि पारंपरिक मूल्य और आदर्श उनकी समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ हैं। परिणामस्वरूप, उसने नए जीवन मूल्यों की खोज शुरू की, लेकिन अपने चारों ओर एक विषैले और धुरीहीन वातावरण में मूल्यों की कमी के कारण, वह भटक गई। वह अजीब विरोधाभास स्थितियों के परस्पर विरोधी तनाव में रहने लगी। इसलिए मूल्यों, क्रांति,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

व्यर्थता की पीड़ा और दो परियों के संघर्ष के कारण जहां सामाजिक जीवन में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हुई, वही व्यक्ति वैचारिक संघर्ष की स्थिति में रहने लगा।

स्वतंत्रता के बाद के भारतीय परिवेश में मूल्य परिवर्तन की स्थिति बहुत तेजी से विकसित हुई है। यद्यपि मूल्य विघटन की यह प्रक्रिया बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही प्रारम्भ हो गई थी, परन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् यह प्रक्रिया कुछ अधिक गतिशील प्रतीत होती है।

बढ़ती स्वार्थपरता व लोकमंगल की भावना का ह्रास

भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र धर्म है। परमार्थ को व्यवहार में आचरित करना ही धर्म है। भारतीय धर्म मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यनत जीवन की सभी समस्याओं को समाविष्ट रखता है। धर्म–ग्रथों में मनुष्य को समाज के अनुरूप बनाने के लिए अनेक विधान हैं, जो मनुष्य को आत्मोतत्कर्ष की ओर ले जाने के साथ–साथ समाज को भी व्यवस्थित करने और कल्याण के मार्ग का अनुगमन करने का मार्गदर्शन किया है। प्रकृत मनुष्य को संस्कारित करने की प्रक्रिया ही संस्कृति है। संस्कृति मनुष्य के मन मस्तिष्क, हृदय तथा उनकी वृत्तियों को संस्कारित करके उसे उदात्त बनाती है। भारतीय धर्म और संस्कृति लोक को पीड़ा, अन्याय, अत्याचार आदि से मुक्त करके लोक–मंगल की कामना करती है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता एव भौतिकता में समन्वय, सहिष्णुता, तपोमय जीवन आदि पर बल देती है। वह करूणा, दया, सहानुभूति, प्रेम आदि उदात्त भावों के महत्त्व को अंगीकार करते हुए, सभी प्राणियों को "आत्मवत्सर्वभूतेषु' देखने की प्रेरणा देती है और सर्वे भवन्तु सुखिन " की कामना करती है। सभी के उत्कर्ष की यह कामना, लोक में मंगल का विधान करना है। वह मनुष्य के सर्वांगीण विकास की पक्षधर है। भारतीय धर्म और सेस्कृति व्यष्टि एव समष्टि दोनों को उत्कर्ष की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करती है।[17] भारतीय संस्कृति की यह अपनी विशिष्टता है। वह आध्यात्मिकता और भौतिकता में समन्वय की आकांक्षा करती है, क्योंकि इन दोनों में समन्वय हुए बिना, व्यक्ति एव समाज का उत्कर्ष सभव नहीं है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

इस तरह कहा जा सकता है कि भारतीय धर्म और संस्कृति वैयक्तिक उत्कर्ष के साथ–साथ लोक के उत्कर्ष की भी कामना करती है। 'लोक' के अपकर्ष से सत्यनिष्ठ एव धर्मनिष्ठ को पीड़ा होती है। इसी अपकर्ष को रोकने के लिए एवं धर्म की रक्षा हेतु, परमसत्ता को इस पृथ्वी पर अवतार लेना पड़ता है। वह लोक में व्याप्त अन्याय अत्याचार पीड़ा आदि को दूर कर के पुनः धर्म की स्थापना करता है जिससे लोक उत्कर्ष की ओर गतिमान हो सके है।

5.6 साम्प्रदायिकता का सन्दर्भ

यदि हम भारतीय परिप्रेक्ष्य में सांप्रदायिकता पर दृष्टिपात करें तो यह आधुनिक राजनीति के उद्भव का ही परिणाम है। हालाँकि इससे पूर्व भी भारतीय इतिहास में हमें ऐसे कुछ उदाहरण मिलते हैं जो सांप्रदायिकता की भावना को बढ़ावा देते हैं लेकिन वे सब घटनाएँ अपवाद स्वरूप ही रही हैं। उनका प्रभाव समाज एवं राजनीति पर व्यापक स्तर पर नहीं दिखता। वर्तमान संदर्भ में सांप्रदायिकता का मुद्दा न केवल भारत में अपितु विश्व स्तर पर भी चिंता का विषय बना हुआ है।[18]

सांप्रदायिकता की अवधारणाः

औपनिवेशिक काल में ही भारत में साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद का स्वरूप स्पष्ट हुआ। यह एक नकारात्मक, प्रतिक्रियावादी, विस्तृत और बहुमुखी अवधारणा, है, जो विभिन्न अवधारणाओं से मिलकर बनी हैं। भारतीय परिवेश को इसने नकारात्मक अर्थ में प्रभावित किया। आज भी यह अपने बर्बर रूप में मौजूद है। भारतीय परिदृश्य में साहित्य और इस अवधारणा के अंतर्संबंध भी जटिल हैं। इस समय प्रचलित साहित्य रूपों में इसकी अभिव्यक्ति मिलती है। सीधे–सीधे भी और अंतर्विरोधात्मक भी।

नाटकों को मानवता का पक्षधर बताने वाली परिभाषाओं के बावजूद यह बात सच है कि इस मानवता के दायरे सीमित हो सकते हैं – समुदाय, क्षेत्र, भाषा आदि के संदर्भ में।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

सांप्रदायिकता एक विचारधारा है जिसके अनुसार कोई समाज भिन्न–भिन्न हितों से युक्त विभिन्न धार्मिक समुदायों में विभाजित होता है।

सांप्रदायिकता से तात्पर्य उस संकीर्ण मनोवृत्ति से है, जो धर्म और संप्रदाय के नाम पर पूरे समाज तथा राष्ट्र के व्यापक हितों के विरुद्ध व्यक्ति को केवल अपने व्यक्तिगत धर्म के हितों को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें संरक्षण देने की भावना को महत्त्व देती है।

एक समुदाय या धर्म के लोगों द्वारा दूसरे समुदाय या धर्म के विरुद्ध किये गए शत्रुभाव को सांप्रदायकिता के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है।[19]

यह एक ऐसी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें सांप्रदायिकता को आधार बनाकर राजनीतिक हितों की पूर्ति की जाती है और जिसमें सांप्रदायिक विचारधारा के विशेष परिणाम के रूप में सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएँ होती हैं।

सांप्रदायिकता में नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों ही पक्ष विद्यमान होते हैं।

सांप्रदायिकता का सकारात्मक पक्ष, किसी व्यक्ति द्वारा अपने समुदाय के उत्थान के लिये किये गए सामाजिक और आर्थिक प्रयासों को शामिल करता है।

वहीं दूसरी तरफ इसके नकारात्मक पक्ष को एक विचारधारा के रूप में देखा जाता है जो अन्य समूहों से अलग एक धार्मिक पहचान पर जोर देता है, जिसमें दूसरे समूहों के हितों को नजरअंदाज कर पहले अपने स्वयं के हितों की पूर्ति करने की प्रवृत्ति देखी जाती है।

साम्प्रदायिकता आधुनिक भारतीय समाज की एक गंभीर परिघटना है। उमेश कुमार चौरसिया जी हिंदी के उन रचनाकारों में से हैं जिनकी रचनाओं में साम्प्रदायिकता जैसी सामाजिक समस्याओं की असलियत को पहचानने और उससे संघर्ष करने की कोशिश लगातार बनी रहती है। अंग्रेजों ने अपनी सत्ता को बनाए रखने हेतु हिन्दू व मुसलमानों में फूट डालने के लिए दोनों सम्प्रदायों के हितों की टकराहट को हवा दी, जिसकी परिणति भारत विभाजन,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

भीषण सांप्रदायिक दंगे और लाखों लोगों के निर्मम विस्थापन के रूप में हुई। आजादी के बाद हमारे देश के राजनीतिक दलों ने कभी वोट बैंक की राजनीति या कभी तुष्टिकरण के द्वारा इसका घृणित उपयोग करना जारी रखा हैं। ऐसी स्थिति में साम्प्रदायिकता पर उमेश कुमार चौरसिया जी द्वारा कलम का चलाया जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है और वे साम्प्रदायिकता और सांप्रदायिक मानस की अचूक पहचान करने में समर्थ रचनाकार साबित हुए है ।[20]

राजस्थान जैसे राज्य में जहां न तो नाटकों की कोई समृद्ध परम्परा रही है और न ही जन–आन्दोलन ही इतने प्रखर रहे हैं, वहां भी विभिन्न शहरों में उमेश कुमार चौरसिया रचित नाटक नरेन्द्र से विवेकानन्द, मेधावी नरेन्द्र, कर्त्तव्य पथ, कुन्ती की व्यथा, टूटता भ्रम, मत चूके चौहान, वीरांगना पन्नाधाय, कर्त्तव्य पथ, खूब लड़ी मर्दानी, दाहरसेन का बलिदान, राम कबीरा एक है, आउवा तुझे प्रणाम, इदं राष्ट्राय, सूर्यपुत्र कर्ण, ओ अहल्या, एकलव्य, अलटू–पलटू चूहे, बोतल का जिन इत्यादि नाटकों का प्रदर्शन सफलतापूर्वक कई स्थानों पर होता रहा है। साथ ही इनके रचित नुक्कड़ नाटक 'अब तो जागो', 'ये है हमारा शहर', 'बोल जमूरे', 'सुनो पुकार', 'हमारी जिम्मेदारी', 'वोट हमारा अधिकार', 'हमारी विरासत', 'झील को बचाओ', 'हमारा भारत', 'सावरकर बोलता है' इत्यादि कई नुक्कड़ नाटक विविध शहरों में सफलतापूर्वक प्रदर्शित हुए हैं और समाज में जागरूकता लाने के अपने उद्देश्य में भी प्रभावी रूप से सफल रहे हैं। नुक्कड़ नाटक के समूह लगभग हर जिले में मौजूद हैं। जो राजस्थान के मार्गदर्शन में नव–जागरण के लिए नाटकों का बहुत सराहनीय ढंग से प्रयोग कर रहे हैं। स्वयं उमेश जी भी स्व निर्देशन में अपनी 'नाट्यवृंद' संस्था के युवा कलाकारों के साथ मिलकर सामाजिक समस्याओं और विषमताओं को उजागर कर सावचेत करने वाले विषयों को लेकर अनेक नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में निरन्तर करते रहते हैं। राजस्थान में नुक्कड़ नाटकों में स्थानीय समस्याओं और उनके लिए किए जा रहे संघर्षों की अभिव्यक्ति के लिए काम करने वाले कलाकारों की संख्या भी कम नहीं है।[22]

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

समाज जब अमीर–गरीब, शोषक–शोषित दो श्रेणियों में बंटा है तो फिर यह भी सच है कि इसमें दो तरह की कलाएं हैं,और उसके दो तरह के मूल्य हैं। एक वे जो 'कला को मात्र कला के रूप में ही स्थापित करते हैं'और दूसरे वे जो 'कला को जीवन के लिए' और समाज को बेहतर बनाने में उसकी कुछ उपयोगिता को स्वीकार करते हैं। **भारतीय शास्त्रों में कहा गया है –''सा कलाया विमुक्तये'' अर्थात कला वही है जो समाज को व्यक्ति को कुरीतियों, कुविचारों और दकियानूसी, रूढ़िवादी व स्त्री–दलित विरोधी सोच के विचारों से मुक्त करे और समाज व राष्ट्र को वैचारिक–सांस्कृतिक उन्नति की ओर ले जाए।** वर्ग–विभक्त समाज में कला–साहित्य की भूमिका भी वर्गीय होती है। रचना के मूल्य समाज के किस वर्ग के हित में खड़े होते हैं इसके आधार पर ही किसी रचना को जनवाद के पक्ष में या उसके विरोध में कहा जा सकता है। 'अन्त्यज का हित ही किसी विचार या कार्य के सही, उचित, नैतिक और करणीय होने की कसौटी' मानने का संदेश देता गांधी जी का जन्तर जनवाद की भी कसौटी कहा जा सकता है। जनवाद का सार 'स्वतन्त्रता, समानता, भाईचारे' में निहित है और इन मूल्यों को बढ़ावा देने वाली रचना को जनवाद को पोषित करने वाली श्रेणी में रखा जा सकता है। नुक्कड़ नाटक का उद्देश्य जनवाद के मूल्यों को प्रसारित करना है इसलिए वे दर्शक को जागरूक करते हैं।

समग्रता में देखें तो उमेश कुमार चौरसिया जी एक जिम्मेदार रचनाकार हैं, निरन्तर विस्तृत शोध और अध्ययन में जुटे रहने के कारण उन्हें ये भी ज्ञात है कि साहित्य का और विशेष तौर पर साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रभावी विधा नाटक का प्रदेय क्या हो, नाट्यलेखन और नाट्यप्रदर्शन से व्यक्ति समाज और राष्ट्र के उत्थान में क्या सार्थक चिन्तन दिया जा सकता है। इस पर बारीकी से अध्ययन के उपरान्त ही वे कोई रचना को अंतिम रूप देते हैं। मानव की समस्त श्रेष्ठ और उज्जवल संस्कृति को धूमिल करने वाली धार्मिक कट्टरताओं, संकीर्ण धार्मिक दृष्टियों, क्रूर साम्प्रदायिकता और विकृत परम्पराओं एवं रुढ़ियों जैसे समाज और देश प्रतिरोधी तत्वों को उजागर करते हुए समाज में जीवन मूल्यों व भारत की संस्कृति एवं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

इतिहास के प्रति गौरव को पुनर्स्थापित करने और सुदृढ़ व सार्थक उद्देश्य धारण करने वाले व्यक्तित्व का निर्माण करने का प्रयत्न करना अपना कर्तव्य मानते रहे है । समाज में परस्पर द्वेष, वैमनस्य, स्वार्थपरता, क्षेत्रवाद, जातिवाद आदि जिस तरह से आज हमारे समाज और राजनीति ही नहीं बल्कि मानसिकता में घुसपैठ कर गए हैं और आज हमारे आसपास जिस तरह की विघटनात्मक, राष्ट्रविरोधी घटनाएं हो रही हैं वे उमेश कुमार चौरसिया जी जैसे रचनाकार को और भी प्रासंगिक तथा अनिवार्य बना देती हैं ।

समाकलन

किसी भी व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का होना ही धर्म है, नैतिक मूल्यों के अनुसार आचरण ही उसे चरित्रवान बनाता है। दूसरे शब्दों में, नैतिक मूल्यों का पालन करना पुण्य है। सदाचार मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाता है और दुष्टता मनुष्य को पशु बना देती है। राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध और विवेकानंद को वास्तविक देवता माना जाता है क्योंकि उनके कार्य नैतिक मूल्यों के अनुरूप थे। उनके पास चरित्र की ताकत थी, उनके पास गुण थे। सत्यता, त्याग, उदारता, नम्रता, करुणा, हृदय की सरलता और नम्रता जैसे नैतिक मूल्यों के बारे में तो सभी जानते हैं, लेकिन इन मूल्यों के अनुसार आचरण करने वाले या अपने जीवन में आत्मसात करने वाले लोगों की संख्या तेजी से कम हो रही है। गिरावट आ रही है इसका मुख्य कारण मैं समझता हूं कि आज का व्यक्ति समाज की उपेक्षा कर रहा है, वह स्वयं को अधिक महत्व दे रहा है और समाज को कम। समाज भी व्यक्ति के सही और गलत आचरण के प्रति तटस्थ रवैया अपना रहा है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की मुख्य जिम्मेदारी परिवार और स्कूल पर होती है और यह जिम्मेदारी तभी पूरी हो सकती है जब यह उसे धार्मिक और नैतिक शिक्षा प्रदान करे। शिक्षा आयोग के शब्दों में, स्कूली पाठ्यक्रम का एक गंभीर दोष सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल का विकार और शिक्षा का अभाव है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

अगर हम अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा और विकास करना चाहते हैं, तो प्रत्येक शिक्षण संस्थान में धार्मिक और नैतिक शिक्षा का उचित संगठन आवश्यक है। धार्मिक और नैतिक शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम में उचित स्थान मिलना चाहिए, इसे अन्य विषयों के समान महत्व मिलना चाहिए क्योंकि व्यक्ति को उसके जीवन दर्शन, प्रेरणा और नैतिकता से आध्यात्मिक शक्ति मिलती है। सत्य, विनय, करुणा, क्षमा, स्नेह, सहानुभूति, स्वावलंबन, निर्भीकता, वीरता, आत्म–बलिदान, ये सभी नैतिक मूल्य व्यक्ति को चरित्रवान बनाते हैं। सद्गुणों को अपनाकर ही हम सच्चा सुख, संतोष और आनंद प्राप्त कर सकते हैं। आज हमारा समाज नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा है। यदि प्रत्येक व्यक्ति सद्गुण के महत्व को समझे और चरित्र शक्ति का विकास करे तो हमारा समाज छल, पाखंड, व्यभिचार, षडयंत्र और संघर्ष से मुक्त हो सकता है। मेरे विचार से प्रत्येक व्यक्ति को सबसे पहले स्वयं को समय देना चाहिए, चिंतन करना चाहिए और आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। अपने भीतर की आवाज मत सुनो। परिवार, दोस्तों, रिश्तेदारों और समाज के लिए भी समय निकालें, खासकर बच्चे जो कल देश का भविष्य बनेंगे, उन्हें धर्म और नैतिक मूल्यों का महत्व समझाएं। हर अच्छा इंसान एक अच्छा परिवार बनाएगा, हर अच्छा परिवार एक अच्छा समाज बनाएगा और एक अच्छा समाज एक संस्कारी देश की पहचान बनेगा।

आधुनिक भौतिकवादी समाज में मानव जीवन सभी आयामों में तेजी से बढ़ता जा रहा है, लेकिन इस मानव जीवन का एक पहलू यह भी है जो लगातार नीचे जा रहा है और मर रहा है और वह पहलू नैतिकता और आध्यात्मिकता का पहलू है, जो मानव को एक का प्रतीक बनाता है वह है इंसानियत।

समाज में बढ़ती हिंसक मानसिकता ने इस नैतिकता को ऐसी गहरी खाई में धकेल दिया है जहां व्यक्ति सामाजिक, धार्मिक, नैतिक और नैतिक पतन की ओर बढ़ रहा है। इस डिजिटल युग में इन नैतिक मूल्यों का ह्रास भी डिजिटल होता जा रहा है और साइबर अपराध इसका सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। यहां तक कि दया, क्षमा और करुणा जैसे बुनियादी

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

नैतिक मूल्य भी लगभग लुप्त हो रहे हैं। नैतिक पतन की ओर उन्मुख इस समाज के लिए वह दिन दूर नहीं जब पूरा समाज इन मूल्यों के लिए तरस जायेगा। तब व्यक्ति असहिष्णु हो जाता है और हिंसा को न्याय का साधन मानने लगता है, जो पूरी तरह से अनुचित है, जिसे नैतिक भाषा में प्रतिशोध ही कहा जा सकता है जो समाज को तार–तार करने कोई कसर नही छोड़ता।

संदर्भ सूची :

[1]. विद्यालय रंगमंच के देशभक्तिपूर्ण नाटक (दो संस्करण) – विद्यालयों में कई बार खेले जा चुके दस रोचक व प्रेरक नाटकों का संग्रह। राजस्थान साहित्य अकादमी के 'शंभुदयाल सक्सेना बाल साहित्य पुरस्कार 2011–12' से सम्मानित । राजस्थानी ग्रंथागार/वर्ष 2008 व 2010/हिन्दी।

[2]. बापू की बाल–पोथी – बच्चों को तन–मन स्वस्थ रखने वाली दिनचर्या तथा सामाजिक जागरूकता वाले विषयों की प्रेरणा देने वाली महात्मा गाँधी । द्वारा लिखी बाल पोथी के साथ–साथ कुछ प्रेरक जीवन प्रसंगों का सरल नाट्य रूपान्तर इसमें संकलित हैं। अरावली प्रकाशन/वर्ष 2010/हिन्दी।।

[3]. अतिथि देवो भव – हास्य–व्यंग्य से सराबोर छः एकांकी का संग्रह।अरावली प्रकाशन/वर्ष 2010/हिन्दी।

[4]. पड़ोसन – गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की उत्कृष्ट कहानियों पर आधारित चार रोचक नाटकों का संग्रह/साहित्यागार/वर्ष 2011/हिन्दी।

[5]. नरेन्द्र से विवेकानन्द – स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधार जनप्रेरक पूर्णांकी नाटक – ग्रंथ विकास/वर्ष 2012/हिन्दी।

[6]. साहित्यकार प्रस्तुति योजना : उमेश कुमार चौरसिया (पेज–86)

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

[7]. विद्यालय रंगमंच रंगमंच के देशभक्तिपूर्ण नाटक (नया परिवर्धित तृतीय करण) – एम. के. पब्लिकेशन/वर्ष 2013

[8]. असली सुगंधः विद्यालयों में कई बार खेले जा चुके दस प्रेरक बाल नाटक /साहित्यसागर प्रकाशन/वर्ष 2014/हिन्दी।

[9]. सूर्यपुत्र कर्णः महाभारत के पात्र कर्ण के अंतर्द्वंद्व, कर्तव्य और परिस्थितिजन्य विवशताओं को उकेरता पूर्णांकी नाटक/जबाहर कला केन्द्र/वर्ष 2015/राजस्थानी।

[10]. शौर्य प्रधान नाटक – भारत के वीर–बलिदानियों की प्रसिद्ध शौर्य गाथाओं पर आधारित पाँच नाटक/साहित्य चन्द्रिका/वर्ष 2016/हिन्दी।

[11]. इदं राष्ट्राय – श्रीगुरुजी के राष्ट्र के प्रति समर्पित जीवन पर आधारित जनप्रेरक पूर्णांकी नाटक/साहित्यागार/2017/हिन्दी।

[12]. विद्यालयी बाल नाटक – विद्यालयों में कई बार खेले जा चुके 19 प्रेरक लघु बाल नाटक/साहित्य चन्द्रिका/2018/हिन्दी।

[13]. मेधावी नरेन्द्र – स्वामी विवेकानन्द के बाल जीवन के रोचक प्रसंगों पर

[14]. आधारित आकर्षक चित्रमय बाल नाटक – राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत (एन.बी.टी. /2018/हिन्दी।

[15]. अशोक लाल एक मामूली आदमी , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , 2006

[16]. उषा गांगुली रूदाली , राधाकृष्णन प्रकाशन , नई दिल्ली , 2005

[17]. किशोर कुमार सिन्हा धारा एक सौ चवालीस , वाणी प्रकाशन , 21 ए , दरियागंज , नई दिल्ली , 2009

ISSN: 2320-3714
Volume:3 Issue:1
July 2022
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

[18]. कृष्ण नन्दन सिन्हा अपहरण , श्री नटराज प्रकाशन , नई दिल्ली , 2013

[19]. नादिरा जहीर बब्बर सुमन और सना , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , 2008

[20]. नरेन्द्र पाल भ्रष्टाचार , वाणी प्रकाशन , 21 ए दरियांगज , नई दिल्ली , 2014

[21]. नरेन्द्र मोहन हद हो गई , यारो , किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली , 2012

[22]. मधु धवन आज की पुकार , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , 2014

[23]. मीराकान्त उत्तर – प्रश्न , स्वराज प्रकाशन , नई दिल्ली , 2016